① 3.3.3.1

Dr. Vidushi
Asst. Prof. of Skt

अनुक्रमणिका

आमुख xi

मधुमती वाक् xiii

आभार प्रदर्शन xv

1. श्रीमद्भगवद्गीता और प्रकृति के तीन गुण 1
   – डॉ॰ नवीन कुमारी

2. मानव–जीवन में गीता की भूमिका 9
   – सीमा रानी

3. श्रीमद्भगवद्गीता में आदर्श व्यक्तित्व 15
   – डॉ॰ विदुषा

4. 21वीं शताब्दी में श्रीमद्भगवद्गीता में मानवीय मूल्य 22
   – डॉ॰ नीरू बाला

5. श्रीमद्भगवद्गीता में आहार–विचार 30
   – डॉ॰ विशम्बर दास

6. Bhagawad Gita Our Present Education System 36
   – Dr. Vandana Gupta & Puneet Bansal

7. व्यक्तिगत एवं सामाजिक उत्थान में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता 42
   – मनु आर्या

3

श्रीमद्भगवद्गीता में आदर्श व्यक्तित्व

डॉ॰ विदुषा

जगद्गुरु योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी जो कि श्रीमद्भगवद्गीता के नाम से विश्वविख्यात है, स्वतः प्रामाणिक है क्योंकि स्वयं सृष्टिरचयिता के द्वारा सृष्टिरचना एवं संचालन का संविधान यहाँ वर्णित है। समस्त वेद एवं उपनिषदों की सारभूता गीता व्यक्ति एवं समाज, व्यष्टि एवं समष्टि, व्यक्ति एवं विश्व से ब्रह्माण्ड पर्यन्त की सन्तुलन गाथा है। एक व्यक्ति का जीवन जो कि परिवार से आरम्भ होता है; परिवार से अपनत्त्व एवं संवेदना अनुभव करता है; वही चेतना जब प्राणिमात्र के लिए अन्तर में सहज स्थापित हो जाए यही व्यक्तित्व की विराट्ता है; उसका चरम है –

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।।[1]

अनुभव ही वस्तुतः सर्वश्रेष्ठ ज्ञान है। व्यक्तित्व का विकास ही सर्वोत्तम गौरव की उपलब्धि की यात्रा है। इसलिए श्रीकृष्ण ने कहा –

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।[2]

सहायकाचार्या संस्कृत, रा॰ महा॰, करनाल (हरियाणा)

विदुषा दहिया

श्रीमद्भगवद्गीता का महत्त्व एवं उपयोगिता

© लेखक

प्रथम संस्करण: 2022

₹ 450

आई.एस.बी.एन. 978–93–91962–01–2

इस पुस्तक के सभी अधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं। अतः कोई भी व्यक्ति अथवा कंपनी इस पुस्तक को एवं इसके किसी भी भाग को इसके मूल रूप में अथवा रूपांतरित रूप में इलैक्ट्रॉनिक, प्रकाशन एवं किसी अन्य क्षेत्र के लिए लेखक से लिखित अनुमति लिए बिना उपयोग करने की चेष्टा न करें।

प्रकाशक : **अवनी पब्लिकेशन्स**

आर जेड–45 डी, स्ट्रीट नं. 2
मेन सागरपुर, नई दिल्ली– 110046
दूरभाष– 09891896481
ई–मेलः– avnipublications@gmail.com

शब्द संयोजक : अंजिता ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : बालाजी ऑफसेट प्रिन्टर्स, दिल्ली

भारत से मुद्रित

अनुक्रमाणिका

आमुख xi

मधुमती वाक् xiii

आभार प्रदर्शन xv

1. श्रीमद्भगवद्गीता और प्रकृति के तीन गुण
   – डॉ॰ नवीन कुमारी 1
2. मानव–जीवन में गीता की भूमिका
   – सीमा रानी 9
3. श्रीमद्भगवद्गीता में आदर्श व्यक्तित्व
   – डॉ॰ विदुषा 15
4. 21वीं शताब्दी में श्रीमद्भगवद्गीता में मानवीय मूल्य
   – डॉ॰ नीरू बाला 22
5. श्रीमद्भगवद्गीता में आहार–विचार
   – डॉ॰ विशम्बर दास 30
6. Bhagawad Gita Our Present Education System
   – Dr. Vandana Gupta & Puneet Bansal 36
7. व्यक्तिगत एवं सामाजिक उत्थान में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता
   – मनु आर्या 42